5. सेनापति

कवि परिचय –

रीतिकाव्य–परंपरा में सेनापति का विशेष स्थान है। इनके पितामह का नाम परशुराम दीक्षित तथा पिता का नाम गंगाधर दीक्षित था। इनके जन्म स्थान को लेकर विद्वानों की एक राय नहीं है। इनके पिता गंगा के किनारे अनूप बस्ती में रहते थे। जनश्रुति के अनुसार सेनापति अनूपशहर (जिला बुलन्दशहर) के निवासी थे। सेनापति संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। सेनापति की दो रचनाएँ मानी जाती हैं – 'कवित्त रत्नाकर' और 'काव्यकल्पद्रुम'। विद्वानों का मानना है कि ये दोनों एक ही ग्रंथ हैं। 'कवित्त रत्नाकर' में पाँच तरंगें तथा 394 छंद हैं। श्लेष इनका सर्वाधिक प्रिय अलंकार है।

सेनापति अपने ऋतुवर्णन के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। इनके पदों में प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण मिलता है। इन्होंने शरद्, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु के मनमोहक चित्र प्रस्तुत किए हैं। ग्रीष्म और वर्षा ऋतु का तो इन्होंने अद्भुत वर्णन किया है। ये रामभक्त कवि हैं।

सेनापति ब्रजभाषा के सिद्धहस्त कवि हैं। प्रवाहयुक्त, भावानुकूल भाषा-प्रयोग इनके काव्य की उल्लेखनीय विशेषता है। इनकी भाषा में ओज, प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का अद्भुत संयोग है। इनके काव्य में सहजता है तथा संस्कृतनिष्ठ शब्दावली होते हुए भी कहीं भी क्लिष्टता नहीं आती।

पाठ परिचय –

इस पाठ में क्रमशः दो पद बसंत ऋतु एवं दो पद ग्रीष्म ऋतु से संबंधित हैं। ऋतु वर्णन के पद सेनापति के प्रकृति-विषयक सूक्ष्म निरीक्षण और उनकी सौंदर्यानुभूति को उद्घाटित करने वाले हैं। प्रथम दो पदों में ऋतुराज बसंत के आगमन और उसके प्रभाव का वर्णन कवि ने बड़ी भावुकता के साथ किया है। ऋतुराज बसंत एक राजा की तरह पूरे दल-बल के साथ आता है। शेष दो पदों में ग्रीष्म ऋतु के प्रभाव को व्यक्त किया है। ग्रीष्म ऋतु के आगमन से पूर्व ही तलघरों को सुधारा जाता है। जलयंत्रों का रख-रखाव कर इत्र, गुलाबजल आदि की व्यवस्था पहले ही कर ली जाती है। भाव के अनुसार भाषा का प्रयोग यहाँ द्रष्टव्य है।

ऋतु वर्णन

बरन बरन तरु फूले उपवन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियत है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियत हैं।।
आवै आस-पास पुहुपन की सुबास सोई,
सोंधे के सुगंध माँझ सने रहियत हैं।।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज,
आवत बसंत रितुराज कहियत हैं।।1।।

मलय समीर सुभ सौरभ धरन धीर,
सरबर नीर जन मज्जन के काज के।
मधुकर पुंज पुनि मंजुल करत गूँज,
सुधरत कुंज सम सदन समाज के।।
व्याकुल वियोगी, जोग कै सकै न जोगी, तहाँ,
बिहरत भोगी सेनापति सुख साज के।
सघन तरु लसत बोलैं पिक-कुल सत,
देखौ हिय हुलसत आए रितुराज के।।2।।

जेठ नजिकाने सुधरत खसकाने, तल,
ताख तहखाने के सुधारि झारियत हैं।
होति है मरम्मति बिबिध जल जंत्रन की,
ऊँचे ऊँचे अटा, ते सुधा सुधारियत हैं।
सेनापति अंतर, गुलाब अरगजा, साजि,
सार तार हार मोल लै लै धारियत हैं।
ग्रीषम के बासर बराइवे कौं सीरे सब,
राज भोग काज साज यौं सम्हारियत हैं।।3।।

देखैं छिति अम्बर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महा झर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानौं पर्‌यौ है।
दारुन तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जु,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।4।।

•••

शब्दार्थ –

बरन–भिन्न / लहियत–सजी / बिरद–विरुदावली / कोकिल–कोयल / मधुप–भौंरा / पुहुपन–पुष्प / सुबास–सुगंध / धीर–मंद / मंजुल–मधुर / कुंज–बाग / मज्जन–स्नानादि कार्य / बिहरत –विहार करता है / लसत–दिखाई देना / पिक–कोयल / खसकाने–खस की पट्टियाँ / अतर –इत्र / सम्हारियत–संभालना / तरनि–नाव / तरबर–वृक्ष।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सेनापति के पिता का नाम है –

   (क) गंगाधर दीक्षित (ख) परशुराम

   (ग) अनूपदास (घ) प्यारेलाल ( )

2. निम्नलिखित में से सेनापति की रचना है –

   (क) पद्माभरण (ख) जगद्विनोद

   (ग) प्रबोध पचीसी (घ) काव्यकल्पद्रुम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सेनापति के पितामह का क्या नाम था ?
2. 'कवित्त रत्नाकर' में कितने छंद हैं ?
3. सेनापति का प्रिय अलंकार कौन-सा है ?
4. 'चतुरंग' से क्या तात्पर्य है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सेनापति का व्यक्तिगत परिचय दीजिए।
2. सेनापति की कृतियों के नाम लिखिए।
3. 'सोई चतुरंग संग दल लहियत है' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।
4. सेनापति के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. बसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को लिखिए।
2. ग्रीष्म ऋतु के आगमन से पूर्व क्या-क्या तैयारियाँ की जाती हैं ?
3. ग्रीष्म ऋतु में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं ?
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

   (क) 'बरन बरन तरु फूले..... आवत बसंत रितुराज कहियत हैं।।'

   (ख) देखैं छिति अम्बर जलै है ..... विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।

•••